डिजिटल समाज में धोखाधड़ी और अपराध (एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य)

डॉ. नीलिमा आर्य, अतिथि शिक्षक, समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

समाज की सरंचना में जब प्रकार्य समाजीकरण के माध्यम से डिजिटली होने लगे तब कठिन कार्य भी सरलता से होने लगे। कार्यों की सरलता ने नई समस्याएं भी उत्पन्न की जिसे डिजिटल धोखाधड़ी या अपराध कह सकते है। एक ईमेल या संदेश जो किसी वैध स्रोत, जैसे कि बैंक या सोशल मीडिया साइट से आया हुआ प्रतीत होता है, जो प्राप्तकर्ता को धोखा देकर पासवर्ड या क्रेडिट कार्ड नंबर जैसी संवेदनशील जानकारी प्रदान कर देता है। धोखाधड़ी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए व्यक्तिगत जानकारी, जैसे सामाजिक सुरक्षा नंबर या बैंक खाते की जानकारी चुराने का कार्य। किसी पीड़ित के ऑनलाइन खाते, जैसे कि सोशल मीडिया या बैंक खाते, तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त कर संवेदनशील जानकारी चुराने या धोखाधड़ी गतिविधियों को अंजाम देने का कार्य। कोई व्यक्ति छूट या बोनस पाने के लिए व्यवसाय के प्रचार अभियानों का दुरुपयोग करता है, कई बार प्रोमो कोड और छूट का उपयोग करके व्यवसाय को धोखा देता है, या अतिरिक्त बोनस पाने के लिए अलग–अलग नामों से कई खाते बनाता है। वे मुफ़्त में सामान प्राप्त करने के लिए कूपन और वापसी नीतियों का भी दुरुपयोग कर सकते हैं। किसी अन्य व्यक्ति के क्रेडिट कार्ड का अनधिकृत उपयोग शामिल है। इसमें 'दोस्ताना धोखाधड़ी' शामिल है, जहाँ किसी व्यक्ति का परिवार का सदस्य बिना पूर्व अनुमति के उनके क्रेडिट कार्ड का उपयोग करता है।